विदेश वार्ता®

International Multilingual Research Journal

Issue-23, Vol-05 January to March-2018

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

Scanned by CamScanner

28) नारी विमर्श और संजीव के उपन्यास
प्रा. भारत चव्हाण || 135

29) गोरख पांडेय के काव्य में अभिव्यक्त समतामूलक दृष्टिकोण
प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर भीमराव महाजन || 139

30) मूल्य शिक्षा : वर्तमान की आवश्यकता
डॉ. पंकज लता || 141

31) वेदान्त में निरूपित शाश्वत मूल्मों की वर्तमान समम में उपमोगिता
डॉ. बी. जी. पटेल || 144

32) डा. रामजी उपाध्याय के शम्बूकाभिषेक नाटक में मौलिक भावनाएँ
प्रभा शंकर शुक्ल || 147

33) प्रणामी धर्म (प्राणनाथ जी) की शिक्षाओं में साम्प्रदायिक सौहार्द के स्वर
असीम मिश्रा || 150

34) "गोल गूंबद वास्तू कला का एक अद्‌भूत नमूना"
प्रा. डॉ. शेख कलीम माहियोद्दीन || 154

35) विज्ञापन डिज़ाईन काउपभोक्ताओं पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव
उज्वल सु. काडोदे || 156

36) भारतीय जीवन बीमा निगम की कालातीत (पुनर्चनल) एवं ऋण.....
डॉ. राजेन्द्र कुमार जायसवाल || 160

37) लघु उद्योगों में कार्यरत् श्रमिकों का सामाजिक चरों के सन्दर्भ में अध्ययन
स्नेहलता शिवहरे, डॉ. सविता सक्सेना || 164

38) तहसील सगड़ी (आजमगढ़) में ग्रामीण सेवा केन्द्रों का निर्धारण .....
डॉ. नरेन्द्र कुमार शर्मा || 172

39) डॉ. राधाकृष्णन के मानववादी शिक्षा के सिद्धान्त
डा. अंकुर शर्मा || 181

40) भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य में मानवता
Savitha Pramod || 189

http://www.vidyawartajournal.blogspot.com
https://sites.google.com/site/vidyawartajournal

Scanned by CamScanner

34

"गोल गूंबद वास्तू कला का एक अद्‌भूत नमूना"

प्रा. डॉ. शेख कलीम माहियोद्दीन
इतिहास विभाग प्रमुख,
मिल्लीया कला, विज्ञान व व्यवस्थापनशास्त्र
महाविद्यालय, बीड.

प्राचीन कला से ही चित्रकार, शिल्पकार, और वास्तू तज्ञों ने अपनी कला के उत्तम नमुने हमारे लिए सुरक्षीत रखे है. जीसे देखकर मन उत्साहित हो जाता है. बांधकाम के क्षेत्र में इजिप्त के पैरेमीड, पॅन्थीयन का कलीसा, स्पेन की मस्जिद–ए–खरतबा, तुर्कस्तान के अस्तंबूल का सेंट सोफीया का कलीसा, इटली का पैसा मिनार, और भारत में ऐलोरा अजंता की गूफाएँ, उज्जैन और तामीलनाडू के मंदिर, मध्यकाल के महेल, किले, मस्जिद, कुतूब मिनार, ताजमहेल, बीबीका मख़बरा, चारमीनार, इब्राहिम आदिलशहा का मख़बरा आदि उल्लेखनीय है. लेकीन इन सभी ईमारतों में बीजापूर का गोलगूंबद अपना अलग ही मूख़ाम रखता है. सबा वहिद नाम के इतिहासकार कहते हैं कि "भारत में मध्यकाल में मख़बरे और बूलंद इमारते बनाई गयी और इसमें बेहतरीन बागात और चमन लगाए गए[१]" दौर जैसे जैसे गूझरता गया मख़बरे बनाने की कला विकसीत होती गयी और समया नुसार बडे बडे, सुंदर और आकर्षक मख़बरे बनाए जाने लगे.

मोहम्मद आदिल शहा का मख़बरा (गोल गुंबद) सभी प्रकार के मख़बरों में एक उत्तम मख़बरा माना जाता है. जिस का उदाहरण दूनिया में कही नही मिलता. बीजापूर के मोहम्मद आदिल शहा का मख़बरा वास्तव में एक बोली गूंबद है. मख़बरे में बात करने से और आवाज़ लगाने से उसकी प्रतीध्वनी या उसकी आवाज़ बार बार सूनाई देती है. अगर इसकी एक दिवार से घडी लगाई जाए तो इसकी टिक,टक की आवाज दूसरी दिवारों में आसानी से सूनाई देती है. इसलीए इसे बोली गूंबद भी कहते है. लेकीन समय के साथ साथ इतिहासकार, पुरातत्त्व विभाग तज्ञ, बोली गूंबद को गोल गूंबद कहने लगे. जबके गुंबद का अर्थ उलटे प्याले की शकल की इमारत के होते है. मोहम्मद आदिलशहा बिजापूर की आदिलशाही खानदान का सातवा हुकूमरान था. जीसने १६२७ से १६५७ तक हुकूमत की खवास खॉन, नवाब खॉन, की बगावते मोगलों के हमले और इनके बढते ख़तरात के बावजूद मोहम्मद आदिलशहा ने अपने राज्य का विस्तार किया. इसके काल में आदिलशाही हुकूमत अपने वैभव के शिखर पर पहूँच चुकी थी मोहम्मद आदिलशहा ने ख़तरात और बाहेरी हमलों के बावजूद अपनी हर जगह जीत का सिलसिला जारी रखा. और अपने पूर्वजों का तरह ज्ञान, कला, स्थापत्य को भी बढावा देने का काम किया. इनके बुजूर्ग इब्राहिम आदिलशहाने अपने काल में ही (अपने हुकूमत के दौरान ही) अपना मख़बरा बनवाया था.जीसे इब्राहिम रोज़ा के नाम से याद किया जाता है. ये रोज़ा या मख़बरा वास्तु कला का एक उत्तम और आकर्षक नमुना (उदाहरण) है.

आसार महेल, जामा मस्जिद, गोल गूंबद, और बीजापूर का किला, आदिलशाही काल की उत्तम और आकर्षक इमारतें (वास्तूएँ) है. मोगल बादशहा शाजहां की इमारते सूंदर, वैभवशाली और आकर्षक थी. लेकीन आदिलशाही इमारते भी वास्तू कला का एक उत्तम उदाहरण थी. मोहम्मद आदिलशहा की ये इच्छा थी कि इसका मख़बरा भी इसके पीता इब्राहीम आदिलशहा के मख़बरे से कम न हो और एक आकर्षक अजूबा बन जाए. इसलीए उसनें हुकूमत की बागडोर संभालते ही अपने मख़बरे की तामीर का काम आरंभ करवा दिया था.

मोहम्मद आदिलशहा के मख़बरे को बनने के लीए तीस साल लगे. इसका मूख्य वास्तु तज्ञ ईराण का मलीक संदल था. जीसने अपने निरिक्षण में गोल गूंबद बनवाया. ऐसा भी कहा जाता है की इसने अपने अंगूठे के नाखून पर गोल गूंबद का नक्शा बनाया था.

Scanned by CamScanner

ात से ये पता चलता है की गोल गूंबद का मूख्य कार अपनी कला में बहोत माहेर था. गोल गूंबद रीसर मजबूत दिवारों से घिरा हूआ है. परीसर में बाग और चमन लगाया गया है. गोल गूंबद में करते ही कूछ दूरी पर मोहम्मद आदिलशहा का हूआ वस्तु संग्रहालय है. जो बहूत ही सुंदर और र्षक है. ये वस्तू संग्रहालय पत्थर से बनाया गया शिल्पकला का एक उत्तम नमूना है. गोलगूंबद एँ ओर बाएँ सरा (धर्मशाला) और नखार खाना है. म दिशा में मस्जिद बनाई गयी है. ये सभी ते पतथर के चबूतरे पर बनाई गयी है. गोल गूंबद कला का एक उत्तम उदाहरण है जीस में, नी तूर्की, सल्जोकी, इराणी, और भारतीय कला बेहतरीन मिश्रण है,[२]" गोल गुंबद चौकोन इमारत है का हर सिरा १५६ फीट है. गुंबद के दिवारों में ना अर्थात (Drum) के प्रकार की फने तामीर की है. इसके गुंबद की चोरो दिवारों की कमानों और राबों के सिरों पर त्रीकोन प्रकार के मेहराबों पर दूनी गॅलरी बनाई गयी है.

गोल गूंबद की दिवारे दस फीट मोटी है. ही दिवारें दो सौ फीट उँची है. गूंबद के चारो कोनों चार मीनार है. मीनार के उपर के हिस्से पर ताज ा छोटी बूर्जी बनाई गयी है. इन मिनारों, गॅलरी, और द की छत पर जाने के लीए इमारत के अंदर से ता है. मीनार में ३६० (तीनसौ साठ) सीढीयाँ है. नार की हर मंझील में अंदर से दरवाजा और बाहेर ओर झरोके नूमा मेहराब और गॅलरी है. जीनसे हेर का नझारा कीया जा सकता है. छत के चारों र बाहरी हिस्से में छोटे मेहराबों की कतार है. जो लर या गोट किनारी की तरह नझर आती है. गूंबद अतराफ (आजू बाजू में) मीनारेां के दरम्यान छोटी र्जीया बनी हुई है. गूंबद की अंदूनी गोलाई पाँच सौ चास फीट है. गुंबद का अन्दरूनी कूतर १२४ फीट और बेरूनी कूतर १४४ फीट है. गूंबद के अतराफ के हिस्से को पत्तो की शकल देकर सुंदर बनाने की कोशीश की गयी है. गूंबद की बाहेरी दिवारों पर नक्श निगार कीया गया है. हर दिवार के बीच में बडा और उँचा दरवाजा है. दरवाजों के दोनों और कमानों के नक्श बनाए गए है. गूंबद के अंदर के हाल की लंवाई और चौडाई १३५ फीट है अंदर की फर्श से गूंबद की दिवारें १७८ फीट बूलंद है. जीस के वाद गॅलरी वनी हूई है. ये गॅलरी दायरा नूमना (Circle) वनी हुई है. इमारत का सबसे आश्चर्य कारक हिस्सा गॅलरी है. ये गॅलरी दिवार से ११ फीट चौडी है. गॅलरी का संपूर्ण वजन दिवार पर है. गूंबद के अंदर की उपर की गॅलरी में खडे होकर आवाज लगाने से अपनी आवाज वार वार सुनाई देती है. गूंबद के अंदर उपर की गॅलरी में खडे होकर आवाज लगाने से अपनी आवाज वार वार सुनाई देती है. ऐसा लगता है कोई दूसरा आदमी हमारी आवाज की नकल कर रहा है. गॅलरी के सामने की दिवार १२४ के फासले पर है. गॅलरी से गुंबद की उँचाई ११० फीट है. गोल गूंवद का कूल रखबा अठरा हजार दो सो पच्चीस फीट है.

१६५७ में गोल गूंवद वन कर तयार हुआ और इसी साल मोहम्मद आदिल शहा की मृत्यू हुई. मोहम्मद आदिलशहा, उसकी दो पत्नीयाँ, और एक बेटी की खवरे इसी गूंवद में है. खवरे जमीन सतर पर है. खबरों के उपर चबूतरा बनाकर और दुसरी खवरे इसी गूंबद में है. खवरे जमीन स्तर पर है. खवरों के उपर चबूतरा बनाकर और दुसरी खवरे वनाइ गयी है. मोहम्मद आदिल शहा की खबर पर तीन शिलालेख फारसी जबान में बहोत ही सूंदर लीपी में लिखे गए है. मोहम्मद आदिल शहाने तीस साल वडे सम्मान से हुकूमत की और मृत्यू के पश्चात अपने ही वनाए हूए मखबरे में वो दफन हूए. मोहम्मद आदिलशाह ने दुनिया की तारिख में एक तारीखी इमारत की बुनियाद डाली. जिसे आज भी देखनेवालों की आँखो को चकाचौंद कर देती है.[३]

यख़ीन नहीं हो पाएगा के ऐसी भी एक आसार–ए–ख़दीमा की सूरत कर्नाटक के शहर बीजापूर में खडी है. बोली गूंबद के वारे में कितना भी लिखूँ आप को समझाँऊ बहोत कम है. गोल गूंवद दुनिया का सबसे वडा दूसरा गूंवद कहलाता है.[४]

आदिलशाही खानदान ने विजापूर में अपने कार्यकाल में इमारते बनाने में ज्यादातर पत्थर का उपयोग कीया है. जो अपने आप में अद्भूत है.

Scanned by CamScanner

आदिलशाही खान्दान की ऐतिहासीक वास्तूऍं देखने के लीए लोग बहूत दूर दूर से आते हैं.

संदर्भ :—

१. लेखक : मिर्झा मोहम्मद खिजर : तारीख के झरोंकों से. P.No. 45. प्रकाशक :अख्तर पब्लिकेशन्स हिमायत बाग औरंगाबाद.

२. लेखक : मिर्झा मोहम्मद खिजर : तारीख के झारोंको से P.No. 45. प्रकाशक: अख्तर पब्लिकेशन्स हिमायत बाग औरंगाबाद.

३. लेखक जमालोद्दीन : बीजापूर तारीखके आईने में P.No. 12. प्रकाशक : रहेमानी पब्लिकेशन्स, अन्सारी रोड, मालेगांव, नासीक.

४. लेखक जमालोद्दीन : बीजापूर तारीख के आईने में P.No. 12. प्रकाशक : रहेमानी पब्लिकेशन्स, अन्सारी रोड, मालेगांव, नासीक.

५. वाकीयात—ए—बीजापूर लेखक: मौलानी बशीरोद्दीन अहमद

६. Bijapur Description: Cousense and Henry.

७. Bijapur and Its Architectural Remains; Counsence.

८. Bijapur Description: Fargusson.

❑❑❑

35

विज्ञापन डिज़ाईन काउपभोक्ताओं पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव

उज्वल सु. काडोदे
SUPVA Rohtak (HR)

****

सारांश

विज्ञापन मुद्रित एवं कलात्मक अभिव्यक्ति की विक्रय कला है। विज्ञापन के उददेश्यों में ध्यान आकर्षित कर उसकी स्मशति में बने रहना और खरीदने की इच्छा निर्माण करना, अच्छे विज्ञापन डिज़ाइन का लक्ष्य होता है। इसमें डिजाइन का मूल उदद्ेश्य सम्प्रषण ही होता है। सम्प्रेशण का अर्थ किसी संदेश या विचार को आगे बढ़ाना है। सम्प्रेशण विचारों, भावों और संदेशो के आदान प्रदान को कहा जाता है। विज्ञापन में डिजाइन की शुरूवात पश्चिमी देशो से हुई है। समय के साथ यह प्रभाव विश्व के सभी विकासशील देशों मे फैला है,तथा विज्ञापन डिजाइन को स्वीकार किया गया। डिजाइन का अर्थ सिर्फ उत्पाद को बेचना या उसकाप्रायोगिक डिजाइन करना ही नही है, बल्कि मनुष्य और उसके पर्यावरण से संबंधित संचार तथा व्यवहार, सामाजिक व्यवस्थाओं की जानकारी देना भी होता है। विज्ञापन किसी भी देश अर्थव्यवस्था का आधार स्तम्भ होता है, क्योंकि विज्ञापन आर्थिक प्रकिया कि महत्वपुर्ण कड़ी है। विज्ञापन आर्थिक लाभ को प्रोत्साहित करने के लिए उपभोक्ता को सूचनाऐं देता है, उत्पादों की बिक्री बढाता है, वस्तु की गुणवत्ता बनाऐ रखता है, रोजगार बढाता है हमारे जीवन शैली को प्रभावित करता है तथा योग्यताओं को बढावा देता है। लेकिन आज के आधुनिक औद्योगिक, अर्थकेन्द्रित दौर एवं मीडियां के युग में विज्ञापन अवधारणा अत्यंत व्यापक हो गयी है। वह सुचना और सम्प्रेषण से आगे बढ़कर मार्केटिंग का असरदार हथियार बन गया है।

Scanned by CamScanner

www.विद्यावार्ता.com

Pay U Money
Online/Net Banking
Debit Card/Credit Card

PAYTM
Payment Accepted here
7588057695
9850203295

SBI BUDDY
9850203295

BHIM APP
Mobile Application
Online/Net Banking

PayU money

Paytm

Buddy Merchant

BHIM

IMPACT FACTOR 5.131 iijif

Cosmos
IMPACT FACTOR
5.234

Indexed

Indexed

Edit By

Dr. Gholap Bapu Ganpat
Parli Vaijnath, Dist.Beed 431 515
(Maharashtra, India)
Cell : +91 75 88 05 76 95

Publisher & Owner

Archana Rajendra Ghodke
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

₹ 400/-

ISSN-2319 9318

www.vidyawarta.com

Scanned by CamScanner